

प्राचीन भारतीय संस्कृति में यक्ष परम्परा: एक ऐतिहासिक अध्ययन

Dr. Richa Pathak

Assistant Professor

Department of Ancient History Archaeology and Culture

K.S. Saket P.G. College, Ayodhya

सार

प्राचीन भारतीय संस्कृति में यक्ष परम्परा का उद्भव और विकास प्रकृति-पूजा, जन-मान्यता और लोक-आस्था से जुड़ा रहा है। [1, 2]

यक्ष परम्परा का स्वरूप और इतिहास

- प्रकृति के रक्षक: प्रारंभिक वैदिक और पूर्व-वैदिक काल में यक्षों को वन, जल, पर्वत, वृक्ष और भूमि में छिपी शक्तियों या प्रकृति-आत्माओं के रूप में माना जाता था। [1, 2]
- उत्पत्ति की कथा: रामायण के अनुसार, प्रजापति ने जल की रक्षा के लिए कुछ प्राणियों को उत्पन्न किया और 'रक्षध्वम्' (रक्षा करो) कहा। इनमें जो 'रक्षामः' बोले वे राक्षस कहलाए और जो 'यक्षामः' (पूजा या सेवा करेंगे) बोले, वे यक्ष के रूप में जाने गए। [1]
- धन और समृद्धि के प्रतीक: हिंदू धर्म में यक्षों के राजा कुबेर को माना गया है, जो धन, समृद्धि और उत्तर दिशा के रक्षक हैं। [1, 2]
- विभिन्न धर्मों में स्थान:
 - बौद्ध धर्म: यक्षों को बुद्ध और बौद्ध स्तूपों का रक्षक माना गया है।
 - जैन धर्म: प्रत्येक तीर्थंकर के साथ उनकी रक्षा और सेवा के लिए एक यक्ष और यक्षिणी की नियुक्ति मानी गई है। [1, 2]
- महाभारत और यक्ष-प्रश्न: महाभारत के 'वनपर्व' में युधिष्ठिर और यक्ष के बीच हुआ संवाद (यक्ष-प्रश्न) अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसमें धर्म और जीवन के गहरे रहस्यों पर चर्चा हुई है। [1]
- प्राचीन कला और मूर्तियाँ: मौर्य, शुंग और गुप्त काल में यक्षों की विशाल और गठीली पत्थर की मूर्तियाँ बनाई गईं। पार्कहम (मथुरा), दीदारगंज और बेसनगर से मिली मूर्तियाँ इस समृद्ध मूर्तिकला का उदाहरण हैं। [1]

परिचय

यक्ष और यक्षिणी का उल्लेख जैन, बौद्ध, हिन्दू तीनों धर्मों में है। “यक्ष” और “यक्षिणियों” को प्राचीन भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक परम्परा में एक विशेष प्रकार के देवता माना है।

✂ जैन धर्म में प्रत्येक तीर्थंकर के साथ एक यक्ष और एक यक्षिणी नियुक्त माने जाते हैं

जो उनकी सेवा और रक्षार्थ रहते हैं।

✂ बौद्ध धर्म में यक्षों को बुद्ध के रक्षक कहा है।

✂ हिन्दू धर्म में इन्हें लोक देवता माना है।

यक्ष यक्षिणिया मध्यम स्तर के देवता हैं न श्रेष्ठ जैसे इन्द्र वरुण और न ही नीचतर जैसे भूत प्रेत आदि होते हैं। इन्हें प्रकृति-देवता या “लोकपाल” भी कहते हैं। इन्हें कुबेर का अनुचर माना जाता है और स्वयम् कुबेर यक्षों के अधिपति माने जाते हैं।

यक्ष यक्षिणी प्राकृतिक स्थल जैसे धनेवन, कैलाश, मेरु पर्वत, पीपल, बरगद वृक्षादि, नदी, तालाबादि में रहते हैं। खासतौर पर अलका नगरी यानि कुबेर की राजधानी और हिमालय क्षेत्र इनके प्रमुख निवास स्थान कहे जाते हैं। जैन दर्शन में इन्हें अर्द्ध देव कोटि में रखा गया है अतः यक्ष-यक्षिणी दीर्घायु होते हैं। [1,2,3]

सामान्यतः इनकी भूमिका धन सम्पत्ति की रक्षा करना, प्रकृति की रक्षा जैसे वृक्ष, जल स्त्रोत, भक्तों को वरदान या शाप देना, क्षेत्रपाल जैसे क्षेत्र की रक्षा करना है। कुछ यक्ष क्रूर भी होते हैं।

यक्ष और यक्षिणी जैन धर्मानुसार

जाति प्रकार

जैन धर्म में यक्ष यक्षिणियों को “विभाव्य” जीव कहा है। यानि ऐसे जीव जो पुण्य के फलस्वरूप विशिष्ट शक्ति और रूप प्राप्त करते हैं। ये देव वर्ग के एक विशेष देव माने जाते हैं लेकिन इन्द्रादि मुख्य देवताओं से उच्च नहीं होते। हर तीर्थंकर के साथ एक यक्ष-पुरुष और एक यक्षिणी-स्त्री नियुक्त होते हैं। ये दोनों उस तीर्थंकर के शासन रक्षक देव होते हैं। इन्हें शासनदेव और शासनदेवी भी कहा जाता है। यक्ष यक्षिणी का जन्म पुण्य के उदय से होता है, वे धर्म कार्य में सहायक होते हैं, और उनकी आयु, शक्तियाँ एवम् रूप बहुत विशेष होते हैं।

जैन धर्म अनुसार देव चार प्रकार के होते हैं 1 भवनवासी, 2 व्यन्तर, 3 ज्योतिषी, 4 वैमानिक। यक्ष-यक्षिणी व्यन्तर प्रकार या जाति के देव हैं।

आगमिक प्रमाण

✍ तिलोपपत्ति (त्रिलोकसार) जैसेग्रन्थों में यक्षों को व्यन्तर जाति का बताया गया है।

यक्षों के विशेष गुण

- यक्षों की भौतिक आकृति होती है।
- वे तुरन्त अपने रूप बदल सकते हैं।
- अपार तेजस्वी चमत्कारी शक्तियों से युक्त होते हैं।
- उनका स्वभाव प्रायः तामसिक भी हो सकता है लेकिन वे धर्म रक्षक हैं।
- व्यन्तर देव इधर उधर विचरण करने वाले, तेज गति से चलने वाले देवता हैं। [4,5,6]

व्यन्तर देवों के आठ गण या समूह

जैन आगमों के अनुसार व्यन्तर देवों के आठ गण बताये हैं:

1 किन्नर, 2 किम्पुरुष, 3 गंधर्व, 4 यक्ष, 5 राक्षस, 6 भूत, 7 नाग और 8 विद्याधर। इन आठ गणों में यक्ष गण प्रमुख हैं।

निवास स्थान

- सामान्यतः यक्ष यक्षिणी का मुख्य निवास स्वर्ग विशेषकर कल्याणक भूमि या तीर्थंकर के निकट ही होता है।
- इनका अपना विशिष्ट स्थान भी होता है जैसे कसी तीर्थ क्षेत्र के आस पास, पर्वतों पर मन्दिरों में मूर्तियों के रूप में उनकी प्रतिष्ठा भी होती है।

✂ जैन मान्यता अनुसार यक्षों का सम्बन्ध कभी कभी “व्यतिक्रम भूमि” यानि भोगभूमि और कर्मभूमि के बीच से भी होता है।

आयु

जैन ग्रन्थों अनुसार आयु लाखों वर्षों तक हो सकती है। [2,3,4]

{ यद्यपि अंततः वे भी नश्वर हैं। अर्थात् एक समय बाद उनका भी देहान्त होता है। वे मोक्ष प्राप्त नहीं करते जब तक कि साधना द्वारा वह लक्ष्य प्राप्त न करे। इसके लिये मनुष्य योनि आवश्यक है।

कार्य/भूमिका

- इनका मुख्य कार्य तीर्थकर के धर्मशासन की रक्षा करना है।
- यक्ष यक्षिणियों का कार्य तीर्थकर के भक्तों की रक्षा, संकटमोचन, वरदान देना और दुष्टों का दमन करना है।
- यक्षिणियां विशेष रूप से रक्षण और भक्तों को धर्म के प्रति आकर्षित करने में समर्थ मानी गई हैं।
- कई बार भक्तों की सच्ची श्रद्धा पर ये अपनी आश्चर्यजनक शक्तियां भी दिखाते हैं।
- ये मोक्ष मार्ग में सहायक हो सकते हैं।

जैन तीर्थकरों की यक्ष और यक्षिणी

क्रम	तीर्थकर	यक्ष	यक्षिणी
01	ऋषभनाथ	गोमती	चक्रेश्वरी
02	अजितनाथ (आजादशत्रु)	अजित	रतिदेवी
03	सम्भवनाथ	प्रयति	प्रजापति देवी
04	अभिनन्दननाथ	वैजयन्ती	वैजयन्ती देवी
05	सुमतिनाथ	यक्षेन्द्र	शान्ति देवी
06	पद्म प्रभु	कुण्डिन्य	धरणेन्द्र
07	सुपार्श्वनाथ	मलंग	सिद्धायिका
08	चन्द्रप्रभु	शंख	ज्येष्ठा
09	पुष्पदन्त (सिद्धार्थनाथ)	कुबेर	मनोभद्रा
10	शीतलनाथ	बृहस्पति	अशोक देवी
11	श्रेयांसनाथ	यक्षसूर	विबुध देवी
12	बासपूज्य	गणधर	वारुणी
13	विमलनाथ	सेनपति	वज्रशृङ्खला
14	अनन्तनाथ	यक्षपुत्र	अनुप्रिया देवी
15	धर्मनाथ	गारुड़	वैष्णवी
16	शान्तिनाथ	क्षेमंकरी	नृसिंही देवी
17	कुन्थनाथ	गणपति	मातंगी देवी
18	अरहनाथ	कटकट	त्रिकला
19	मल्लिनाथ	कुमार	ब्रह्मी देवी
20	मुनिसुव्रतनाथ	वरुण	नरवर्णिनी
21	नमिपाथ	यक्षराज	कुन्दकुन्दला देवी
22	नेमनाथ	गंधर्व सेन	अम्बिका
23	पार्श्वनाथ	धरणेन्द्र	पद्मावती
24	महावीर स्वामी	मातंग	सिद्धायिका

यक्षों और यक्षिणियों का विवरण निम्न ग्रन्थों में उपलब्ध है।

1. “कल्पसूत्र” भद्रबाहु द्वारा रचित, तीर्थकरो का जीवन चरित्र इसमें मिलता है लेकिन यक्ष यक्षिणियों का उल्लेख सीमित है।
2. “निषद्गुणावली” और “भगवती तीर्थकर आराधना” में यक्ष यक्षिणियों का स्वरूप और पूजा का वर्णन मिलता है। [10,11,12]
3. “प्रज्ञापनसूत्र (षड्दर्शन अंग) यहाँ यक्षों का संकेतात्मक उल्लेख है।
4. “यक्ष स्तुति” “चक्रेश्वरी स्तुति” “पद्मावती स्तुति” अलग-अलग देवी-देवताओं के उनकी स्तुति ग्रन्थों में उनके स्वरूप, वाहन, आयुध आदि का विस्तृत विवरण है।
5. “तिलयप्पण्णत्ति” दिगम्बर परम्परा के इस ग्रन्थ में यक्ष यक्षिणी के उपासना के नियम मिलते हैं।
6. जैन पुराण जैसे हेमचन्द्राचार्य कृत “त्रिषष्टिशलाका पुरुष चरित्र” यहाँ विस्तार से 24 तीर्थकरो के साथ यक्ष तथा यक्षिणियों का सम्बन्ध दिया है।

यक्ष यक्षिणियों का संक्षिप्त विवरण [3,4,5]

- ✱ तीर्थकर पार्श्वनाथ के साथ सबसे प्रसिद्ध यक्ष और यक्षिणी धरणेन्द्र और पद्मावती हैं। ये प्रसिद्ध यक्ष यक्षिणी हैं।
- ✱ तीर्थकर ऋषभ देव की मुख्य यक्षिणी चक्रेश्वरी देवी, वाहन गरुड़ है।
- ✱ अम्बिका देवी यक्षिणी तीर्थकर नेमिनाथ के साथ, वाहन सिंह है।
- ✱ पद्मावती देवी, नागिन स्वरूपा पार्श्वनाथ की यक्षिणी, वाहन सर्प है।
- ✱ यक्षों में धरणेन्द्र नागराज और मातंग महावीर स्वामी के साथ है।

➤ यक्ष और यक्षिणियों की साधना मुख्यतः सिद्धियों और संसार सुरक्षा के लिए की जाती है। ये साधक को सांसारिक बधाओं से बचाती है। इनकी मूर्तियाँ तीर्थकर के साथ विराजित होती हैं।

विचार-विमर्श

यक्ष यक्षी

जैन धर्म के अनुयायी जिन, तीर्थकरो की मूर्तियों को पूजा करते हैं, जिन्हें सर्वोच्च प्राणी मानते हैं, लेकिन बीतते समय के साथ अनुयायी मन्दिरों में अन्य देवताओं, यक्ष, यक्षिणियों को पूजने लगे हैं। इस पर अनेक विद्वान् आश्चर्य करते हैं कि वे कौन हैं? वे वहाँ कैसे पहुँचे? उन्हें इतना महत्व कैसे मिला? क्या उन्हें वहाँ होना चाहिये?

कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें अधिक सम्मान मिलता है, वे जिन तीर्थकरो के समान नहीं हैं, जिन तीर्थकरो ने आंतरिक वासनाओं पर विजय पा ली है उनकी तुलना में ये यक्ष यक्षिणी वासनाओं से भरे हुए हैं और हमारी ही तरह जन्म मृत्यु के चक्र में भटक रहे हैं। उन्हें शासन देव भी कहा जाता है जो संरक्षक देवता हैं। ये व्यन्तर समूह में स्वर्गीय प्राणी हैं जिनके पास अपना रूप और आकार बदलने की क्षमता सहित आलोकिक शक्तियाँ हैं।

कुछ जैनो की मान्यता है कि तीर्थकरो की भलाई की देखभाल करने के लिये इन्द्र ने उन्हें नियुक्त किया है इसलिये वे तीर्थकरो के आसपास ही पाए जाते हैं और इससे जैन मन्दिरों और जिन के आसपास उनकी उपस्थिति परिलक्षित होती है। वे एक पुरुष (यक्ष) और स्त्री (यक्षी) के रूप में पुरुष तीर्थकर के दाहिने और स्त्री बायीं ओर होती हैं। पहले के समय इन्हें जिन भक्त माना जाता था, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ इनकी पूजा की जाने लगी है।

सभी यक्ष परोपकारी नहीं होते कुछ दुष्ट भी हो सकते हैं जैसे सुलपानी यक्ष ने भगवान महावीर को ध्यान में बहुत परेशान किया, कष्ट पहुँचाया। यक्ष के निवास स्थान को चैत्य या आयतन के रूप में भी जाना जाता है। यह कहीं भी हो सकता है शहर के बाहर, पहाड़ी या पर्वत पर, पेड़ पर, जलाशय के पास, शहर के भीतर, किसी धर या महल में। [5,6]

मनुष्य अवसरवादी होते हैं ये जिन की पूजा चाहे जितनी ईमानदारी से क्यों न करे वे पुरस्कार नहीं देते। इसलिये जैनी लोग तत्काल लाभ के लिए यक्ष यक्षिणियों की ओर देखते थे और अपनी सेवा के लिये उन्हें अपने मन्दिरों में स्थान दिया। कुछ यक्ष अपने भक्तों को प्रजनन और धन प्रदान करने लिये जाने जाते थे और आज भी जाने जाते हैं। इसलिए ये बहुत लोकप्रिय हो गये। जैन लोग उन्हें सन्तान, धन या भय, बीमारी और रोग मुक्ति के वरदान के रूप में विभिन्न वस्तुएँ चढ़ाते हैं, उनकी मूर्तियाँ जैन मन्दिरों में रखते हैं और उनकी पूजा अराधना करते हैं।

स्थानंगसूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, भगवतीसूत्र, ततवार्थसूत्र, अतंगदाससौसूत्र और पौमकारिया जैसे पहले के ग्रन्थों में यक्ष का बार बार उल्लेख मिलता है। हरिवंश पुराण 783 ईसवी में शासनदेवता के रूप में उनके इस संदर्भ ने इस अवधारणा की शुरुआत की। मणिभद्र, पूर्णभद्र यक्ष और बहुपुत्रिका यक्षिणी सबसे पसंदीदा यक्ष-यक्षिणी रहे हैं। बहुपुत्रिका यक्षी जिसके कई पुत्र थे का नाम मणिभद्र यक्ष की रानी के रूप में लिया जाता है। हरिवंश पुराण में रोग, ग्रह, भूत और पिशाच की हानिकारक शक्ति को शान्त करने के लिये यक्ष और यक्षिणी की क्षमता का वर्णन किया गया है। कुछ लोगों का मानना है कि वीतराग जिन की पूजा से भौतिक इच्छाओं की पूर्ति नहीं हो पाती थी इसलिये उनकी कृपा के लिये वे अधिक लोकप्रिय हो गए। इसी कारण 10 से 13 शताब्दी तक जैन कार्य में यक्षराज सर्वानुभूति और धरणेन्द्र यक्ष और चक्रेश्वरी, अम्बिका, पद्मावती, ज्वालामालिनी यक्षिणिया इतने लोकप्रिय हो गये कि उनके स्वतंत्र अनुयायी विकसित हो गए। उनके स्वतंत्र मन्दिर बनने लगे।

इनका कुछ प्रतीकात्मक विशेषताओं का ही उल्लेख है। चौवीस यक्ष यक्षी की जोड़ियों की सूची को लगभग आठवी-नौवीं शताब्दी में अंतिम रूप दिया गया। जैसा कि कहावली, तिलोयापत्रत्ती 4.934-39, प्रवचनसिरोद्धरा 375-378 में मिलता है। जबकि इनके स्वतंत्र प्रतीकात्मक रूपों को 11-12 शताब्दी ईसवी में मानकीकृत किया गया। जैसा कि निर्वाणकालिका, त्रिशस्त्रिसलकपुरुषचरित्र, प्रतिष्ठासारसंग्रह, प्रतिष्ठासरोद्धरा, प्रतिष्ठितिलका आदि कई ग्रन्थों में वर्णित है। हालांकि यक्षों और यक्षिणियों के नामों में दिगम्बर और श्वेताम्बर परम्पराओं के बीच बहुत अन्तर है। उनमें से अधिकांश के नाम, प्रतीकात्मक विशेषताएं ब्राह्मणवादी या बौद्ध देवी-देवताओं के प्रभाव को दर्शाती हैं।

मूल आगमों में जिनमूर्ति और मूर्तिपूजा का उल्लेख नहीं है, फिर भी पिछले 2500 वर्षों में हजारों उत्कृष्ट मन्दिर बनवाये हैं। अब यक्ष, यक्षी को खड़ा करके, उनकी पूजा करके, उनसे भौतिक लाभ की मांग करके जैन आध्यात्मिक मार्ग से विचलित हो रहे हैं और भौतिक आसक्तियों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। भौतिक लाभ की बात देखे तो उनकी पूजा करने वाले सभी अनुयायी को मिलना चाहिये लेकिन ऐसा नहीं होता। इसलिये व्यक्ति मिथ्यात्व/मिथ्या विश्वास में रहता है। जो भौतिक लाभ होता है वह अपने शुभ कर्मों की परिपक्वता से ही होता है। जो कोई उन्हें जिन के बराबर पूजता है वह गलत दिशा में जा रहा है। यह प्रत्येक व्यक्ति पर निर्भर करता है कि किन मूर्तियों को नमन करना है और किनकी प्रशंसा करना है।

जैन मन्दिरों में यक्ष और यक्षिणियों की मूर्तियाँ तीर्थंकर की प्रतिमा के पास, परन्तु उनसे नीचे या अलग स्थान पर स्थापित की जाती हैं, और उनकी स्थिति हमेशा तीर्थंकर की स्थिति से गौण होती है। ↓

{ जैन धर्म में यक्ष यक्षिणी तीर्थंकरों के शासन देवी-देवता माने जाते हैं। ये तीर्थंकरों के विशेष सेवक और रक्षक होते हैं, लेकिन स्वयम् तीर्थंकरों के समान मोक्षमार्ग प्रदर्शक नहीं माने जाते। [4,5]

{ जैन दर्शन के अनुसार अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु-इन पांच परमेष्ठियों को ही मुख्य नमस्कार किया जाता है। णमोकर मन्त्र में यही पांचों की वन्दना की जाती है।

{ यक्ष यक्षिणियों की पूजा लोकाचार या भक्ति परम्परानुसार की जाती है, विशेषकर मनोकामना की पूर्ति हेतु। वे उपास्य तो हो सकते हैं परन्तु मोक्षमार्ग के दृष्टिकोण से नमस्करणीय नहीं माने जाते। जैन तत्त्वज्ञान के अनुसार पांच परमेष्ठियों को ही सर्वोच्च वन्दनीय माना गया है।

परिणाम

यक्षों और यक्षिणियों की प्राचीनता का अनुमान लगाना कठिन है। हालांकि, 300 ईसा पूर्व से 200 ईसा पूर्व के दौरान, वैधान्तिक परिदृश्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। इन पंथों को अक्सर छोटे, ग्रामीण लोक पंथों के रूप में वर्णित किया जाता है, लेकिन साक्ष्य इसके विपरीत संकेत देते हैं।

उत्तर भारत भर में यक्षों और यक्षिणियों की बड़ी संख्या में पत्थर की मूर्तियाँ मिली हैं, जो इस पंथ की व्यापक लोकप्रियता का प्रमाण हैं। हालांकि, 200 ईसा पूर्व के कुछ समय बाद, यक्ष पंथ हिंदू, बौद्ध और जैन परंपराओं में समाहित होने लगा। हिंदू पौराणिक कथाओं में यक्षों को धन के देवता कुबेर के रूप में शामिल किया गया। वहीं यक्षिणियों ने देवताओं की सेविकाओं के रूप में विभिन्न रूप धारण किए।

सांची, बहुत और मथुरा के प्रसिद्ध बौद्ध स्तूपों के चारों ओर यक्षिकाओं की कई आकृतियाँ उकेरी गई हैं। इसी प्रकार, जैन धर्म में भी यक्षिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। 24 तीर्थकरों में से प्रत्येक के साथ एक यक्षिका जुड़ी हुई थी, जिनमें सबसे प्रमुख 22वें तीर्थकर नेमिनाथ की यक्षिका अंबिका थीं। जैन गुफाओं और मंदिरों में यक्षिकाओं की कई नक्काशी और मूर्तियां पाई जाती हैं।

हालांकि, समय बीतने के साथ, पूजे जाने वाले दयालु यक्षों और यक्षिणियों का स्वरूप भी नकारात्मक होता चला गया और उन्हें अक्सर दुष्ट आत्माओं के रूप में चित्रित किया जाने लगा जिन्हें प्रसन्न करने की आवश्यकता थी। हालांकि हजारों सुंदर यक्षी मूर्तियां मौजूद थीं, लेकिन उनमें से कुछ पौराणिक हैं।[5]

निष्कर्ष

यक्षों और यक्षिणियों की अवधारणा का विकास इस बात का भी प्रतिबिंब है कि कैसे स्थानीय देवी-देवताओं को व्यापक हिंदू, बौद्ध और जैन धर्म में समाहित किया गया। जब कोई नई जनजाति किसी नए धर्म में परिवर्तित हुई, तो उनके देवताओं को प्रमुख धर्म में शामिल कर लिया गया, लेकिन उनकी भूमिका कम कर दी गई। इन देवताओं को अक्सर शिव, विष्णु, बुद्ध और तीर्थकरों जैसे शक्तिशाली देवताओं के सेवकों का दर्जा दिया जाता था। उनकी पूजा की जा सकती थी और वे मनोकामनाएं पूरी कर सकते थे, लेकिन उनका स्थान हमेशा गौण ही रहा। आज भी, हालांकि यक्षिणियों की उत्पत्ति रहस्य में डूबी हुई है, उनकी मूर्तियां अपनी बेजोड़ सुंदरता और भव्यता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे भारतीय मूर्तिकला और कला के कुछ बेहतरीन उदाहरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं! [6]

संदर्भ

1. Prachin Bhartiya kala me Yaksh Kinnar Au. अभिगमन तिथि: 25 May 2020.
2. Samskriti sandhāna. अभिगमन तिथि: 25 May 2020.
3. Narayanan, Vasudha (21 May 2020). "Origin, History, Beliefs, Gods, & Facts". Encyclopedia Britannica. अभिगमन तिथि: 25 May 2020.
4. "Indian Culture and Heritage". Cultural Samvaad. 14 April 2020. अभिगमन तिथि: 25 May 2020.
5. Hindutva Ka Madhu. अभिगमन तिथि: 25 May 2020.
6. यक्ष प्रश्न Archived 2010-09-06 at the वेबैक मशीन - एक चिट्ठा